



INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान CET

Graduation Level

राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग

भाग - 3

भारत का भूगोल + राजव्यवस्था + अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “राजस्थान CET (स्नातक स्तर)” को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSSB) द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “राजस्थान CET (स्नातक स्तर)” की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे /

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं

प्रकाशक:

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <http://www.infusionnotes.com>

WhatsApp करें - <https://wa.link/29dvxg>

Online Order करें - <https://rb.gy/8kw806>

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	<u>भारत का भूगोल</u>	
1.	भारत की स्थिति व विस्तार	1
2.	प्रमुख स्थलाकृतियाँ	4
3.	जलवायु एवं मानसून तंत्र	21
4.	प्रमुख नदियाँ, झीलें एवं बांध	28
5.	वन एवं वन्य जीव, जन्तु एवं अभयारण्य	41
6.	प्रमुख फसलें	46
7.	प्रमुख खनिज	50
8.	ऊर्जा संसाधन	54
9.	प्रमुख उद्योग	59
10.	राष्ट्रीय राजमार्ग, परिवहन के साधन एवं व्यापार	68
	<u>भारतीय संविधान</u>	
1.	भारतीय संविधान की प्रकृति	76
2.	भारतीय संविधान की विशेषताएं	78
3.	प्रस्तावना (उद्देशिका)	81
4.	मौलिक अधिकार	83
5.	राज्य के नीति निर्देशक तत्व (सिद्धांत)	90
6.	मौलिक कर्तव्य	93
7.	संविधान संशोधन	94
8.	आपातकालीन प्रावधान	97
9.	जनहित याचिका	99
10.	राष्ट्रपति	101
11.	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	110
12.	संसद	116
13.	उच्चतम न्यायालय	125
14.	राज्य कार्यपालिका	128
15.	निर्वाचन आयोग	135

16.	नियंत्रण एवं महालेखा परीक्षक	138
17.	केन्द्रीय सूचना आयोग	140
18.	लोकपाल	144
19.	राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग	146
20.	स्थानीय स्वशासन एवं पंचायती राज संस्था	147
	<u>भारतीय अर्थव्यवस्था</u>	
1.	बजट निर्माण	155
2.	बैंकिंग	159
3.	लोक वित्त	171
4.	वस्तु एवं सेवा कर	176
5.	राष्ट्रीय आय	179
6.	संवृद्धि एवं विकास का आधारभूत ज्ञान	183
7.	राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ	185
8.	सब्सिडी एवं लोक वितरण प्रणाली	187
9.	ई - कॉमर्स	192
10.	भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र	197
11.	हरित क्रान्ति, खेत क्रान्ति एवं नीली क्रान्ति	199
12.	पंचवर्षीय योजनाएं एवं नियोजन प्रणाली	204

भारत का भूगोल

अध्याय - 1

भारत की स्थिति व विस्तार

भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित है तथा तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।

- भारत का अक्षांशीय विस्तार $8^{\circ}4'$ उत्तरी अक्षांश से $37^{\circ}6'$ उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार $68^{\circ}7'$ पूर्वी देशान्तर से $97^{\circ}25'$ पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल $32,87,263$ वर्ग किमी. (1269219.34 वर्ग मील) है।
- कर्क रेखा अर्थात् $23\frac{1}{2}^{\circ}$ उत्तरी अक्षांश हमारे देश के लगभग मध्य से गुजरती है यह रेखा भारत को दो भागों में विभक्त करती है (1) उत्तरी भारत , जो शीतोष्ण कटिबन्ध में फैला है तथा (2) दक्षिणी भारत , जिसका विस्तार उष्ण कटिबन्ध है।

कर्क रेखा भारत के आठ राज्यों क्रमशः गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, प. बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम है।

NOTE- राजस्थान की राजधानी जयपुर, त्रिपुरा की राजधानी अगरतला व मिजोरम की राजधानी आइजोल कर्क रेखा के उत्तर में तथा शेष राज्यों की राजधानियाँ दक्षिण में स्थित हैं।

NOTE - मणिपुर कर्क रेखा के सर्वाधिक उत्तर में स्थित है।

प्रश्न:- निम्न में से कौन सा भारत का राज्य कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है ? (RAS PRE. 2015)

त्रिपुरा (2) मणिपुर
मिजोरम (4) झारखण्ड

उत्तर :- (2)

NOTE- कर्क रेखा राजस्थान से न्यूनतम व मध्यप्रदेश से सर्वाधिक गुजरती है।

- भारत सम्पूर्ण विश्व का लगभग $1/46$ वाँ भाग है।
- क्षेत्रफल के अनुसार रूस , कनाडा , चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राज़ील व ऑस्ट्रेलिया के बाद भारत का विश्व में 7वाँ स्थान है।
- यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग $1/5$, संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का $1/3$ तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का $2/5$ है।
- भारत का आकार जापान से नौ गुना तथा इंग्लैंड से 14 गुना बड़ा है।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।

- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% (वर्ष 2011 के अनुसार) जनसंख्या भारत में रहती है।
- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में पाकिस्तान एवं अरब सागर है।
- भारत को श्रीलंका से अलग करने वाला समुद्री क्षेत्र मन्नार की खाड़ी (Gulf of Mannar) तथा पाक जलडमरूमध्य (Palk Strait) है।
- प्रायद्वीप भारत (मुख्य भूमि) का दक्षिणतम बिन्दु - कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु) है।
- भारत का सुदूर दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार में है)।
- भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल (लद्दाख) है।
- भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर $82^{\circ}30'$ पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिरापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है। यह मानक समय रेखा भारत के 5 राज्यों क्रमशः उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा व आंध्रप्रदेश है।
- कर्क रेखा व मानक रेखा छत्तीसगढ़ राज्य में एक दुसरे को काटती है।
- भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।
- भारत की समुद्री सीमा मुख्य भूमि, लक्षद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की तटरेखा की कुल लम्बाई 7,516.6 कि.मी है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

भारत की तटीय / समुद्री सीमा = तट रेखा की लम्बाई 7516.6 मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

कुल राज्य = 9 [i. पश्चिमी तट के राज्य- गुजरात (राज्यों में सबसे लंबी तट रेखा), महाराष्ट्र, गोवा (राज्यों में सबसे छोटी तट रेखा), कर्नाटक व केरल ii. पूर्वी तट के राज्य प. बंगाल, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु]

कुल केंद्र शासित प्रदेश= अंडमान निकोबार (सर्वाधिक), लक्षद्वीप, दमन व दीव तथा (न्यूनतम) पुद्दुचेरी

- भारत के 16 राज्य व 2 केंद्र शासित प्रदेश अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाते हैं।

देश की चतुर्दिक् सीमा बिन्दु

- दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप)



- उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (लद्दाख)
- पश्चिमी बिन्दु- गोहर माता (गुजरात)
- पूर्वी बिन्दु- किबिथु (अरुणाचल प्रदेश)
- मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु)

स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य

पाकिस्तान (5)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर, लद्दाख
अफगानिस्तान(1)	लद्दाख
चीन (5)	लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
म्यांमार (4)	अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

पड़ोसी देशों के मध्य सीमा विस्तार

भारत - बांग्लादेश सीमा	4096.7 किमी.
भारत-चीन	3488 किमी.
भारत-पाक सीमा	3323 किमी.
भारत - नेपाल सीमा	1751 किमी.
भारत - म्यांमार सीमा	1643 किमी.
भारत - भूटान सीमा	699 किमी.
भारत - अफगानिस्तान	106 किमी. (वर्तमान में POK में स्थित है)

- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41% है। जनसंख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा राज्य है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से गोवा भारत का सबसे छोटा राज्य है।

शीर्ष पाँच क्षेत्रफल वाले राज्य

राज्य	क्षेत्रफल वर्ग किमी.
राजस्थान	342239
मध्यप्रदेश	308245
महाराष्ट्र	307713
उत्तर प्रदेश	240928
गुजरात	196024

उत्तर - (1)

शीर्ष पाँच भौगोलिक क्षेत्र वाले जिले भारत में

जिला	क्षेत्रफल वर्ग किमी.
कच्छ	45652
लेह	45110
जैसलमेर	38428
बाड़मेर	28387
बीकानेर	27284

- जनसंख्या की दृष्टि से सिक्किम भारत का सबसे छोटा राज्य है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह सबसे बड़ा केन्द्र-शासित प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र -शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से दिल्ली सबसे बड़ा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- उत्तर प्रदेश की सीमा सबसे अधिक राज्यों (8) को छूती है- उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं बिहार।
- भारत में सर्वाधिक नगरों वाला राज्य उत्तर प्रदेश है जबकि मेघालय में सबसे कम नगर हैं।
- भारत में सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या वाला राज्य महाराष्ट्र है जबकि सबसे कम नगरीय जनसंख्या सिक्किम में है।

प्रमुख चैनल / जलडमरूमध्य

विभाजित स्थल खण्ड	चैनल / खाड़ी / स्ट्रेट
इन्दिरा प्वाइंट- इण्डोनेशिया	ग्रेट चैनल
लघु अंडमान-निकोबार	10° चैनल
मिनीकॉय-लक्षद्वीप	9° चैनल
मालदीव-मिनीकाय	8° चैनल
भारत-श्रीलंका	पाक जलडमरूमध्य

• अभ्यासार्थ प्रश्न

1. भारत का अक्षांशीय व देशांतरिय विस्तार क्रमशः है-
(A) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पश्चिमी देशान्तर तक
(B) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक
(C) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' दक्षिणी अक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक
(D) 68°7' उत्तरी अक्षांश से 97°25' उत्तरी अक्षांश तथा 8°4' पूर्वी देशान्तर से 37°6' पूर्वी देशान्तर तक
उत्तर:- (B)

हिमालय के प्रमुख दर्रे

1. पश्चिमी हिमालय के दर्रे :-

काराकोरम :-

यह काराकोरम श्रेणी में अवस्थित है, जो उत्तर में स्थित है इसकी ऊँचाई 5000 मी. है और भारत के लद्दाख को चीन के शिंजियांग प्रान्त से मिलाता है।

जम्मू - कश्मीर के दर्रे-

बनिहाल दर्रे-

यह जम्मू से श्रीनगर जाने का नवीन मार्ग प्रदान करता है। इस दर्रे में भारत की सबसे लम्बी सुरंग चेनारी नासिरी सुरंग (9.2 किमी. वर्तमान में नया नाम श्यामा प्रसाद मुखर्जी) व जवाहर सुरंग (2531 मी.) स्थित है।

पीरपंजाल दर्रे-

जम्मू से श्रीनगर

जोखिला दर्रे-

श्रीनगर से कारगिल

लद्दाख के दर्रे-

फातुला दर्रे-

कारगिल से लेह

खारदुंगला दर्रे-

लेह से जुब्रा घाटी यह विश्व का सबसे ऊँचा मोटर वाहन चलाने योग्य दर्रा था (18380 फीट) लेकिन वर्तमान में विश्व का सबसे ऊँचा मोटरसाहन चलाने योग्य दर्रा उमलिंगा दर्रा (19300 फीट) है

चांगला :- यह लद्दाख को तिब्बत से मिलाता है, यह शीत ऋतु में हिमपाद के लिए बंद रहता है।

लानक ला :- लद्दाख के चीन अधिकृत अक्साई चीन में स्थित है और तिब्बत की राजधानी तथा लद्दाख के बीच सम्पर्क बनाता है।

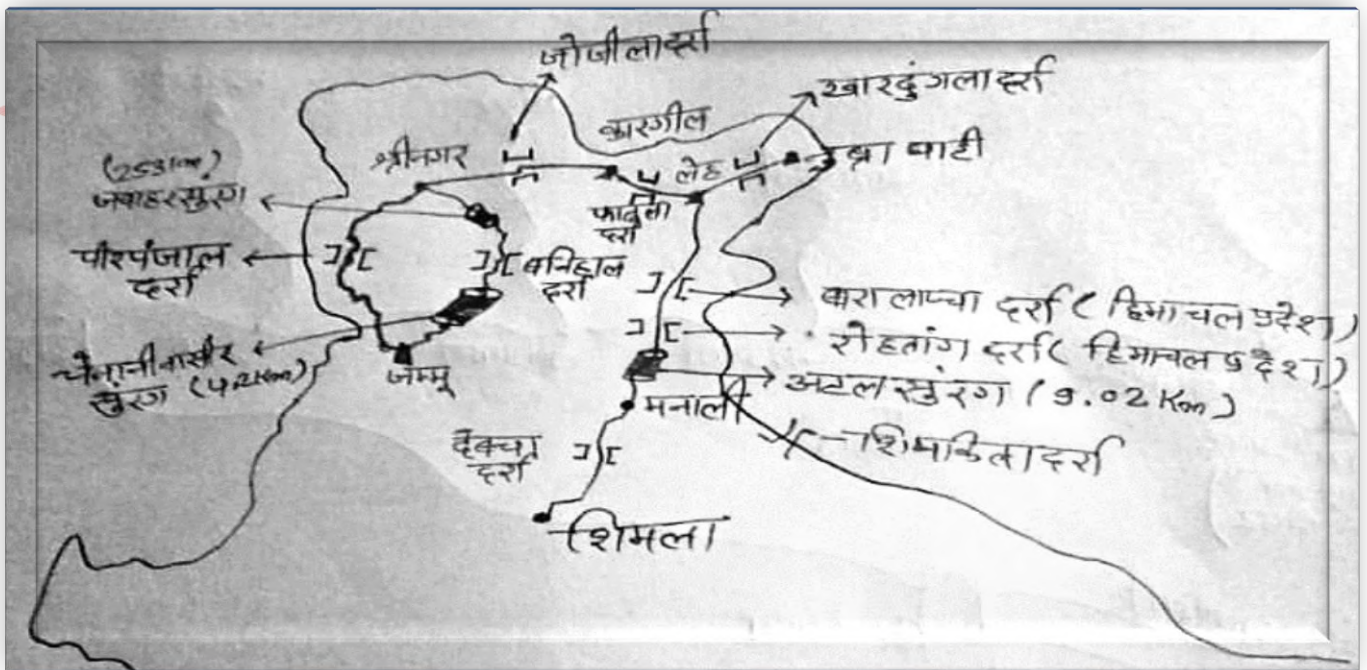
हिमाचल प्रदेश के दर्रे-

बरालाचा ला :- यह मंडी और लेह को आपस में जोड़ता है इसी से मनाली - लेह सड़क गुजरता है। यह शीत ऋतु बंद रहता है

रोहतांग :- यह हिमाचल के लाह और स्पीति के बीच में संपर्क बनाता है इसी से मनाली - लेह सड़क गुजरता है। इस पर अटल सुरंग (9.02) स्थित है।

शिपकी ला :- हिमाचल प्रदेश को चीन से मिलाता है

देबचा दर्रे- मनाली से शिमला



उत्तराखंड के दर्रे

लिपुलेख :- यह उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है।

यह उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में अवस्थित है। इस पर उत्तराखंड, चीन, और नेपाल के ट्राई - जंक्शन स्थित है। इसी से कैलाश मानसरोवर की यात्रा सम्पन्न होता है।

माना :- यह भी उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है जो बद्रीनाथ मंदिर से कुछ ही दूर स्थित है।

नीति :- यह भी उत्तराखंड और तिब्बत के जोड़ता है जो नवम्बर से लेकर मई तक बंद रहता है।

2. पूर्वी हिमालय के दर्रे :-

सिक्किम के दर्रे

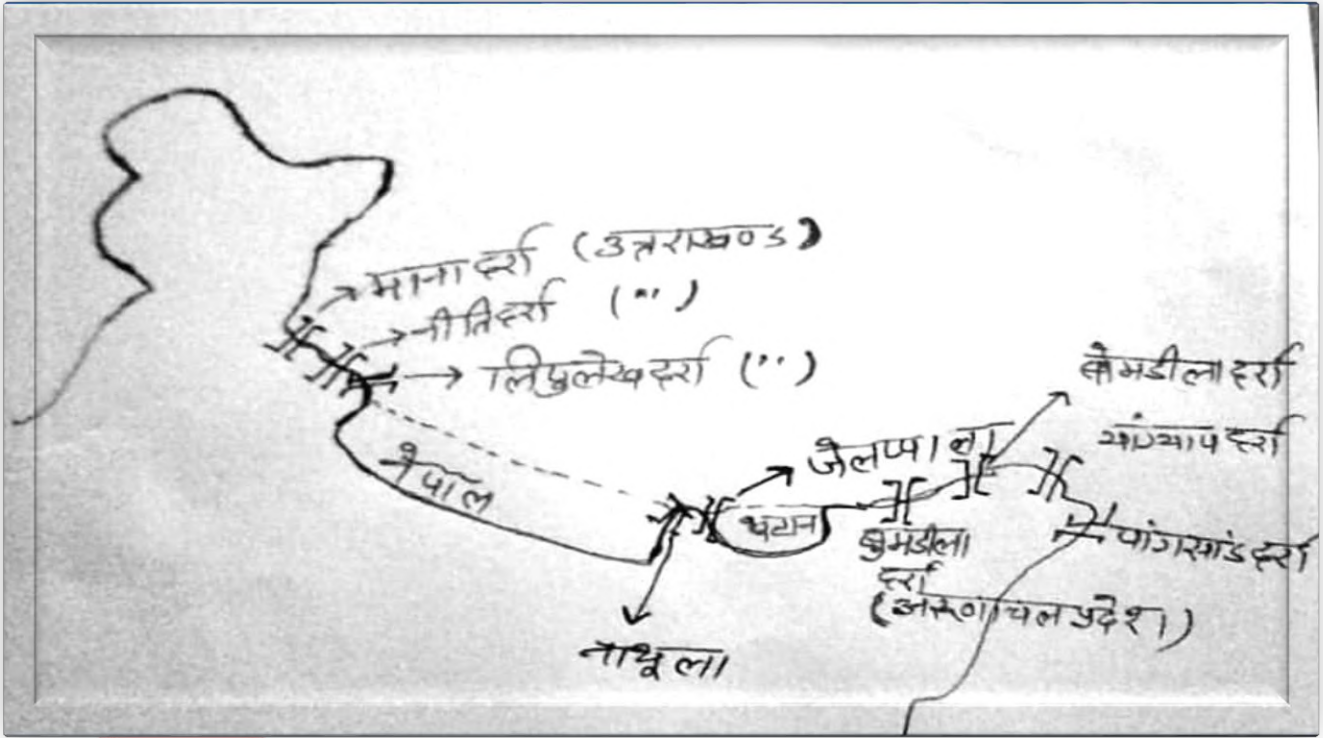
नाथू ला :- यह सिक्किम (भारत) - चीन सीमा पर स्थित है जो लगभग 4310 मी. की ऊँचाई पर है। यह प्राचीन सिल्क मार्ग का अंग था और यहाँ से भारत एवं चीन के बीच व्यापारिक संबंध थे। भारत - चीन युद्ध (वर्ष 1962) के बाद इसे बंद कर दिया गया था लेकिन वर्ष 2006 को पुनः खोल दिया गया है।

जेलप ला :- यह सिक्किम - भूटान सीमा पर स्थित है और चुम्बी घाटी द्वारा सिक्किम को ल्हासा (तिब्बत) से जोड़ता है।

अरुणाचल प्रदेश के दर्रे

बोम-डि-ला बुमला यांग्याप दर्रे - यह तीनों दर्रे अरुणाचल प्रदेश को तिब्बत के पठार से जोड़ते हैं।

पान्नासाई : - यह भी अरुणाचल प्रदेश को म्यांमार से जोड़ता है।



इंडो तिब्बत थ्रस्ट (IT THARST)	ट्रांस हिमालय को महान हिमालय से अलग
मुख्य केन्द्रीय दरार (MCT)	महान हिमालय को मध्य हिमालय से अलग
मुख्य सीमांत दरार (MBT)	मध्य हिमालय को शिवालिक हिमालय से अलग
हिमालयन फ्रंट फॉल्ट (HFF)	शिवालिक हिमालय को गंगा के मैदान से अलग

• मैदान

1. उत्तर भारत का विशाल मैदान

- उत्तरी मैदान का निर्माण इयोसीन काल से प्रारंभ हुआ। विभिन्न भौगोलिक हलचलों तथा नदियों द्वारा लाए गए अवसाद के कारण टेथिस सागर भरने लगा जिसके भरने से भारत के उत्तरी मैदान का निर्माण हुआ।
- यह मैदान हिमालय तथा प्रायद्वीपीय पठार के मध्य स्थित है जो लगभग 2400 km लम्बा 400 से 90 km चौड़ा है।
- इस मैदान में स्थित अवसादों की गहराई 2000 m तक है।
- इस मैदान का ढाल 25 cm से भी कम है वहीं इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 250 - 300 m. है।

उत्तरी मैदान के उपविभाग

भाबर-

- यह हिमालय के शिवालिक पहाड़ियों के पाद में पाया जाता है। यहाँ नदियाँ अपने साथ कंकड़, पत्थर लेकर आती हैं जिन्हें निक्षेपित कर देती हैं।
- इन कंकड़ पत्थरों के नीचे नदियाँ बहती हैं इसके कारण यह नदियाँ दिखाई नहीं देती हैं। इस क्षेत्र की चौड़ाई 8-26 km होती है यह क्षेत्र कृषि के लिए अधिक उपयुक्त नहीं होता है।

तराई -

- यह क्षेत्र भाबर के दक्षिण में पाया जाता है जिसकी चौड़ाई 20-30 km तक होती है। नदियाँ तराई क्षेत्र में महिन कणों को निक्षेपित करती हैं।
- यह क्षेत्र दलदली क्षेत्र होता है भाबर में विलुप्त हुई नदियाँ इस क्षेत्र में पुन दिखाई देती हैं।

खादर -

- नदी के बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में व्याप्त नई जलोढ़ मृदा से निर्मित मैदान को खादर कहते हैं।
- इन क्षेत्रों में अत्यधिक उपजाऊ मृदा पाई जाती है।
- साथ ही प्रतिवर्ष इनमें नई मृदा उपलब्ध होती है।
- पंजाब में खादर के मैदान को 'बेट' कहते हैं।

बांगर

- नदीय क्षेत्र में ऐसा उच्च स्थान जिसमें प्रतिवर्ष बाढ़ का पानी नहीं पहुँच पाता वह क्षेत्र बांगर कहलाता है।
- ये क्षेत्र अपेक्षाकृत उच्च होते हैं इन प्रदेशों में कंकड़ युक्त चूने वाली मृदा पाई जाती है।

अध्याय - 4

प्रमुख नदियाँ, झीलें एवं बांध

भारत नदियों का देश है। भारत के आर्थिक विकास में नदियों का महत्वपूर्ण स्थान है। नदियाँ यहाँ आदिकाल से ही मानव की जीविकोपार्जन का साधन रही हैं।

- भारत में 4000 से भी अधिक छोटी व बड़ी नदियाँ हैं, जिन्हें 23 वृहत् तथा 200 लघु नदी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।
- किसी नदी के रेखीय स्वरूप को प्रवाह रेखा कहते हैं। कई प्रवाह रेखाओं के योग को प्रवाह संजाल (Drainage Network) कहते हैं।

अपवाह व अपवाह तंत्र (Drainage and Drainage System)

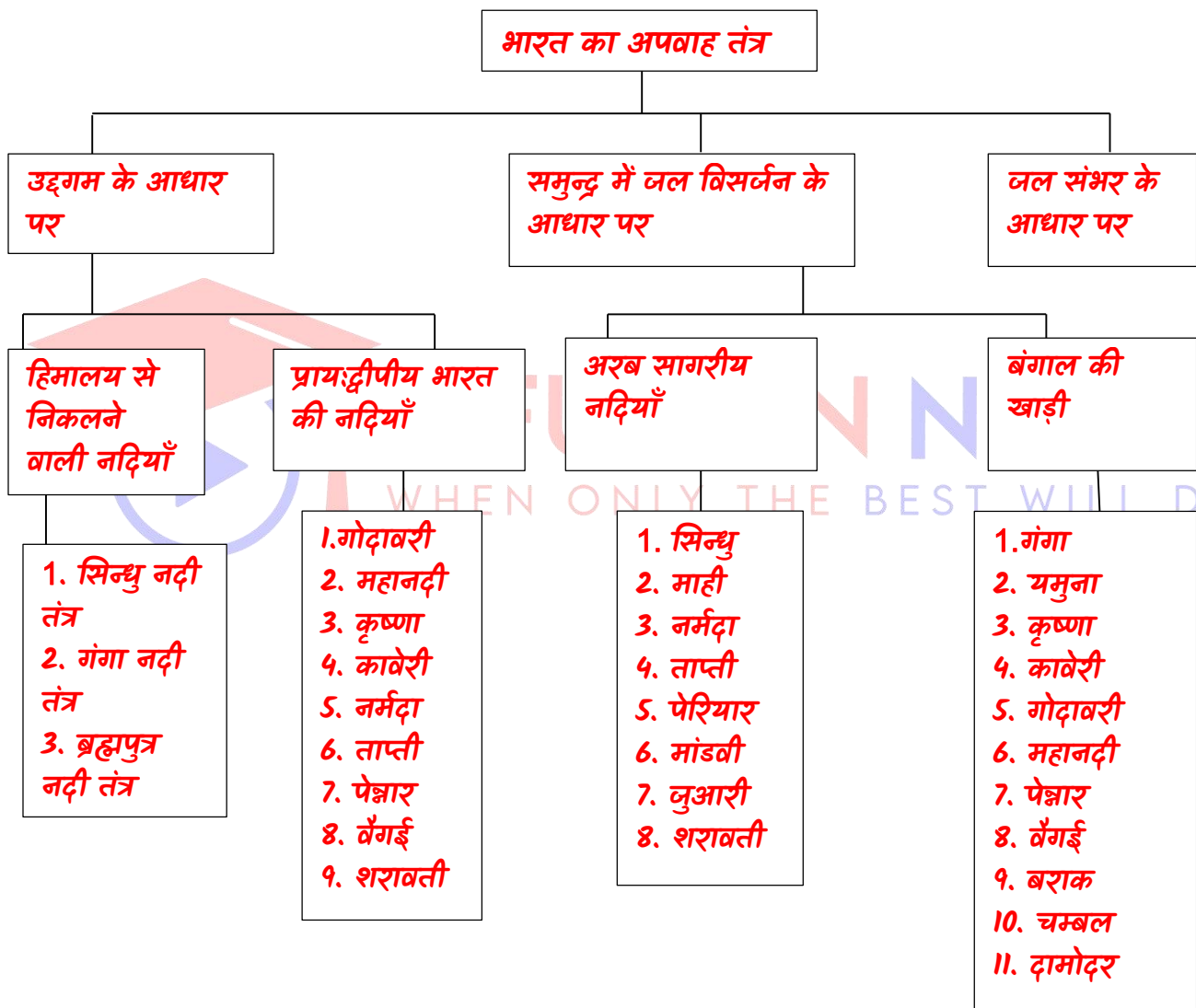
निश्चित वाहिकाओं (Channels) के माध्यम से हो रहे जल प्रवाह को अपवाह (Drainage) तथा इन वाहिकाओं के जाल को अपवाह तंत्र (Drainage System) कहा जाता है।

जलग्रहण क्षेत्र (Catchment Area)-

एक नदी विशिष्ट क्षेत्र से अपना जल बहाकर लाती है जिसे जलग्रहण क्षेत्र कहते हैं।

अपवाह द्रोणी -

एक नदी व उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को अपवाह क्षेत्र कहते हैं।



- कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 77 प्रतिशत भाग, जिसमें गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा आदि नदियाँ शामिल हैं। बंगाल की खाड़ी में जल विसर्जित करती हैं,
- जबकि 23% भाग जिसमें सिन्धु, नर्मदा, तापी, माही व पेरियार नदियाँ शामिल हैं। अपना जल अरब सागर में गिराती हैं।
- नदी अपना जल किसी विशेष दिशा में बहाकर समुद्र में मिलाती हैं, यह कई कारकों पर निर्भर करता है। जैसे

भूतल का ढाल, भौतिक संरचना, जल प्रवाह की मान एवं जल का वेग।

जल संभर क्षेत्र / Watershed area

जल संभर क्षेत्र के आकार के आधार पर भारतीय अपवाह श्रेणियों को तीन भागों में बाँटा गया है

1. प्रमुख नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 20000 वर्ग किलोमीटर से अधिक है। इसमें 14 नदियाँ श्रेणियाँ



शामिल हैं। जैसे - गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, तापी, नर्मदा, माही, पेन्नार, साबरमती, बराक आदि।

2. मध्यम नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 से 20,000 वर्ग किलोमीटर के बीच हैं। इसमें 44 नदी श्रेणिया हैं, जैसे - कालिंदी, पेरियार, मेघना आदि।

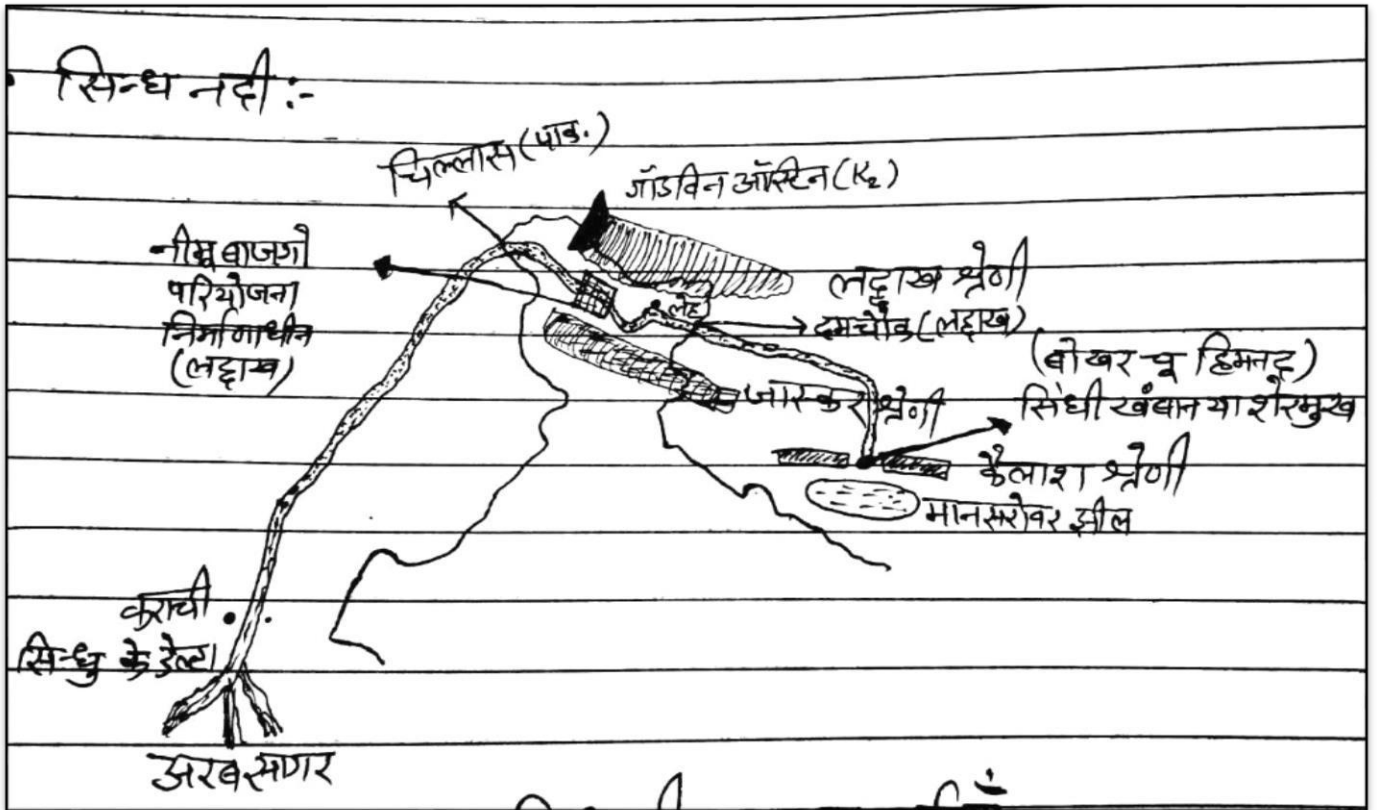
3. लघु नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 वर्ग किलोमीटर से कम हैं। इसमें न्यून वर्षा के क्षेत्रों में बहने वाली बहुत सी नदियाँ शामिल हैं।

हिमालयी अपवाह तंत्र

- हिमालय से निकलने वाली नदियाँ बर्फ और ग्लेशियरों (हिमानी या हिमनद) के पिघलने से बनी हैं अतः इनमें पूरे वर्ष के दौरान निरन्तर प्रवाह बना रहता है। हिमालय की नदियों के बेसिन बहुत बड़े हैं एवं उनके जलग्रहण क्षेत्र सैकड़ों-हजारों वर्ग किमी. में फैले हैं। हिमालय की नदियों को तीन प्रमुख नदी-तंत्रों में विभाजित किया गया है।

- उत्तर भारत के अपवाह तंत्र में हिमालय का अधिक महत्त्व है।
- ये नदियाँ तीव्र गति से अपनी घाटियों को गहरा कर रही हैं।
- उत्तरी भारत की नदियाँ अपरदन से प्राप्त मिट्टी को बहाकर ले जाती हैं तथा मैदानी भागों में जल प्रवाह की गति मंद पड़ने पर मैदानों और समुद्रों में जमा कर देती हैं। इन्हीं नदियों द्वारा लायी गई मिट्टी से उत्तर भारत के विशाल मैदान का निर्माण हुआ है।
- इस क्षेत्र की नदियाँ बारहमासी (Prennial) हैं क्योंकि ये वर्षण एवं बर्फ पिघलने दोनों क्रियाओं से जल प्राप्त करती हैं। ये नदियाँ गहरे महाखण्डों से गुजरती हैं। जो हिमालय के उत्थान के साथ-साथ होने वाली अपरदन क्रिया द्वारा निर्मित हैं।

सिन्धु नदी तंत्र



- यह विश्व की सबसे बड़ी नदी श्रेणियों में से एक है, जिसका क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km हैं। भारत में इसका क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी हैं।
- सिन्धु नदी की कुल लंबाई 2,880 किमी. है। परंतु भारत में इसकी लम्बाई केवल 1,114 km हैं। भारत में यह हिमालय की नदियों में सबसे पश्चिमी नदी है।
- सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बती क्षेत्र में स्थित कैलाश पर्वत श्रेणी (मानसरोवर झील) में बोखर-चू के निकट एक ग्लेशियर (हिमनद) से होता है। तिब्बत में इसे शेर मुख अथवा सिंगी खंबान कहते हैं।

- सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम सिन्धु नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।
- अन्य सहायक नदियाँ - जास्कर, स्यांग, शिगार, गिलगिट, श्योक, हुंजा, कुर्रम, नुबरा, गास्टिंग व द्रास, गोमल।
- अंततः यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के निकट पहाड़ियों से बाहर निकलती है। जहाँ दाहिने तट पर काबुल, तोची, गोमल, विबोआ और संगर नदियाँ इसमें मिलती हैं।
- यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती है। पंचनद नाम पंजाब की



गंगा की प्रमुख सहायक नदियाँ

दाएँ ओर से	बाएँ ओर से
यमुना	रामगंगा
सोन	गोमती
पुनपुन	घाघरा
	गंडक
	कोसी
	महानंदा

यमुना नदी -

- इस नदी का उद्गम उत्तराखण्ड में बदरपूछ श्रेणी की पश्चिमी ढाल पर स्थित यमुनोत्री हिमनद से हुआ है।
- यमुना नदी गंगा की सबसे पश्चिमी व सबसे लम्बी नदी है। जो गंगा से इलाहाबाद में आकर मिलती है।
- प्रायद्वीप पठार से निकलने वाली चम्बल, सिंध, बेतवा, केन इसके दाहिने तट पर मिलने वाली सहायक नदियाँ हैं इसके बाएँ तट पर हिंडन, रिंद, सेंगर, वरुणा आदि नदियाँ मिलती हैं।
- चम्बल नदी मध्यप्रदेश के मालवा पठार में महु के निकट निकलती है तथा राजस्थान के कोटा में बहते हुए उत्तरप्रदेश में यमुना से आकर मिलती है यह अपनी 'उत्खात भूमि' (Badland Topography) के लिए प्रसिद्ध है।

यमुना की सहायक नदियाँ

चम्बल

- उद्गम- जानापाव की पहाड़ी में (MP)
- NOTE-** राजस्थान की एकमात्र बारहमासी नदी
- उपनाम चर्मवती, राजस्थान की कामधेनु
- राजस्थान का एकमात्र हैगिंग ब्रिज (कोटा) इसी नदी पर हुआ है। इस नदी पर 4 बाँध बने हुए हैं (1) गांधी सागर (MP) 2. राणा प्रताप सागर (चित्तौड़गढ़, राजस्थान) 3. कोटा बैराज (कोटा, राजस्थान) जवाहरसागर (कोटा, राजस्थान)
- इटवा (UP) के निकट यमुना में मिल जाती है।

सिन्ध

- उद्गम- मालवा का पठार, विदिशा (MP)
- बुंदेलखण्ड (UP) के निकट यमुना में मिल जाती है।
- इस नदी पर मध्यप्रदेश राज्य में मानीखेडा बाँध बनाया गया है।

बेतवा

- उद्गम- विध्यांचल पर्वतमाला (MP)
- हमीरपुर (UP) के पास यमुना में विलेय
- इस नदी पर मध्यप्रदेश राज्य में माताटीला परियोजना स्थित है।

केन

- उद्गम- कैमूर की पहाड़ी (M.P.)
- फतेहपुर के निकट यमुना में विलेय

- यह नदी मध्यप्रदेश के पन्ना राष्ट्रीय उद्यान से होकर गुजरती है।
- सोन नदी-**
- यह मध्यप्रदेश में अमरकंटक की पहाड़ियों से निकलती है तथा पटना से पहले गंगा के दायाँ तट से इससे मिल जाती है।
- दामोदर नदी**
- उद्गम- घोटानागपुर पठार (झारखण्ड)
- दाहिनी ओर से मिलने वाली गंगा की अंतिम सहायक नदी।
- यह नदी ढाल पर बहती है तो सीढ़ीनुमा जल प्रपातों का निर्माण करती है तथा ऐसे जल प्रपातों को सोपानी जल प्रपात / Terraced slope / क्षिप्रिकाएँ कहते हैं।
- भारत में सर्वाधिक क्षिप्रिकाएँ बनाने वाली नहीं है।
- इसे बंगाल का शोक कहते हैं
- विश्व में सर्वाधिक क्षिप्रिकाएँ बनाने वाली नदी- कोलरेडो नदी (U.S.A.)
- बहुउद्देशीय परियोजना के तहत कुल- 8 बाँध बनाए गए।
- भारत में सबसे प्राचीन नदी घाटी परियोजना है। कार्य- 1948 में प्रारम्भ
- NOTE-** विश्व की सबसे प्राचीन नदी घाटी परियोजना- टेनिस (USA)
- रामगंगा नदी-**
- इसका उद्गम उत्तराखण्ड राज्य में हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में नमीक ग्लेशियर से होता है।
- यहां से उत्तराखण्ड व उत्तर प्रदेश राज्यों में बनने के बाद उत्तर प्रदेश के कन्नौज स्थान पर जाकर गंगा नदी में मिल जाती है।
- उत्तराखण्ड राज्य में नैनीताल नगर स्थित है।
- रामगंगा नदी पर उत्तराखण्ड राज्य में स्थित जिम कार्बेट नेशनल पार्क (नया नाम रामगंगा नेशनल पार्क है) स्थित है। इस नदी के किनारे उत्तर प्रदेश राज्य के मुरादाबाद, बरेली व बदायूं नगर स्थित हैं।
- गोमती नदी-**
- यह नदी उत्तरप्रदेश के पीलीभीत जिले से निकलती है तथा गाजीपुर में गंगा नदी से मिलती है।
- लखनऊ व जौनपुर इसी के किनारे बसे हैं।
- घाघरा नदी-**
- तिब्बत के पठार में स्थित मापचाचुंगों हिमनद से निकलती है तथा बाराबंकी जिला (उत्तरप्रदेश) में सरयू (शारदा नदी) इससे आकर मिलती है। और अन्ततः यह छपरा (बिहार) में गंगा से मिलती है
- गंडक नदी -**
- नेपाल (धौलागिरि व माउंट एवरेस्ट) से इसका उद्गम होता है तथा यह अन्ततः सोनपुर (बिहार) में गंगा से मिल जाती है।
- यह नदी बिहार राज्य के वाल्मीकि नेशनल पार्क से गुजरती है।



भारत के प्रमुख बांध सूची

क्र. सं.	बांध परियोजना	नदी का नाम	राज्य का नाम
1.	टिहरी बांध	भागीरथी नदी	उत्तराखंड
2.	हीराकुंड बांध	महानदी	उड़ीसा
3.	सरदार सरोवर बांध	नर्मदा नदी	गुजरात
4.	फरक्का बांध परियोजना	हुगली नदी	पश्चिम बंगाल
5.	उरी बांध	झेलम नदी	जम्मू कश्मीर
6.	दुलहस्ते बांध	चिनाब नदी	जम्मू कश्मीर
7.	सलाल बांध परियोजना	चिनाब नदी	जम्मू कश्मीर
8.	बगलिहार बांध	चिनाब नदी	जम्मू कश्मीर
9.	रणजीत सागर बांध (थीन बांध)	रावी नदी	जम्मू-कश्मीर और पंजाब
10.	भाखड़ा नांगल बांध	सतलज नदी	हिमाचल प्रदेश और पंजाब
11.	पोंग बांध	व्यास नदी	हिमाचल प्रदेश
12.	नाथपा झाकड़ी बांध	सतलज नदी	हिमाचल प्रदेश
13.	धौलीगंगा बांध	धौली गंगा नदी	उत्तराखंड
14.	रिहंद बांध	रिहंद नदी	उत्तर प्रदेश
15.	रानी लक्ष्मीबाई (राजघाट बांध)	बेतवा नदी	उत्तर प्रदेश

क्र. सं.	बांध परियोजना	नदी का नाम	राज्य का नाम
16.	माताटीला बांध	बेतवा नदी	उत्तर प्रदेश
17.	मैंथन बांध	बराकर नदी	झारखंड
18.	तिलैया बांध	बराकर नदी	झारखंड
19.	पंचेत बांध	दामोदर नदी	झारखंड
20.	मयूराक्षी बांध परियोजना	मयूराक्षी नदी	पश्चिम बंगाल
21.	बीसलपुर बांध	बनास नदी	राजस्थान
22.	माही बजाज सागर	माही नदी	राजस्थान
23.	राणा प्रताप सागर बांध	चंबल नदी	राजस्थान
24.	जवाहर सागर बांध	चंबल नदी	राजस्थान
25.	गांधी सागर बांध	चंबल नदी	मध्य प्रदेश
26.	इंदिरा सागर बांध	नर्मदा नदी	मध्य प्रदेश
27.	ओंकारेश्वर बांध परियोजना	नर्मदा नदी	मध्य प्रदेश
28.	उकाई बांध	तापी नदी	गुजरात
29.	काकरापार बांध	तापी नदी	गुजरात
30.	कोयना बांध	कोयना नदी	महाराष्ट्र
31.	उजनी बांध	भीमा नदी	महाराष्ट्र
32.	जायकवाडी बांध	गोदावरी नदी	महाराष्ट्र
33.	कृष्णा राजा सागर बांध	कावेरी नदी	कर्नाटक



- मध्य प्रदेश में स्थित बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान बंगाल टाइगर के लिए प्रसिद्ध है।
- उत्तराखण्ड के नंदा देवी के शिखर पर स्थित नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान पार्क 1982 में राष्ट्रीय उद्यान बना। इस क्षेत्र के अंतर्गत फूलों की घाटी है, जहाँ किस्म-किस्म के फूलों की छटा बिखरी हुई है।
- दुधवा राष्ट्रीय उद्यान(उत्तर प्रदेश) नेपाल से अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाता है। इसे 1977 में इसे राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया।
- यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल मानस अभयारण्य (असम) राष्ट्रीय उद्यान देश का चर्चित टाइगर और एलीएंट रिजर्व भी है। इसका नाम मानस उद्यान के पश्चिम से बहने वाली मानस नदी के नाम से पड़ा है। एक सींग का गैंडा अतिरिक्त यहाँ कई अन्य दुर्लभ जीव-जंतु भी पाए जाते हैं।
- पेरियार अभयारण्य जंगली हाथियों के लिए प्रसिद्ध है।
- भारतीय पक्षी विज्ञानी और प्रकृतिवादी सलीम अली को बेंडमैन ऑफ इंडिया कहा जाता है सलीम अली राष्ट्रीय पक्षी उद्यान जम्मू कश्मीर के श्रीनगर में है।
- विश्व वन्य जीव कोष का प्रतीक पांडा है।
- शेर परियोजना 1972 ई. शुरू की गई।
- बाघ परियोजना 1973 ई. शुरू की गई।
- घड़ियाल परियोजना 1974 ई. शुरू की गई।
- गैंडा परियोजना 1987 ई. शुरू की गई।
- हिमचीता परियोजना 1987 ई. शुरू की गई।
- मगर प्रजनन परियोजना 1975 ई. शुरू की गई।

भारत के प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान, राज्य और प्रमुख वन्यजीव

राष्ट्रीय उद्यान	राज्य	प्रमुख वन्यजीव
बाँदीपुर राष्ट्रीय उद्यान	कर्नाटक	हाथी, तेंदुआ, हिरण, चीतल, साँभर
तुंगभद्रा अभयारण्य	कर्नाटक	तेंदुआ, चीतल, काला हिरण, चौसिंगा
भद्रा अभयारण्य	कर्नाटक	भालू, हाथी, साँभर, तेंदुआ, हिरण
सोमेश्वर अभयारण्य	कर्नाटक	जंगली कुत्ता, हिरण, तेंदुआ, साँभर
मानस राष्ट्रीय उद्यान	असम	हाथी, भालू, एक सींगवाला, गैंडा, लंगूर, हिरण
काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान	असम	एक सींग वाला गैंडा

राष्ट्रीय उद्यान	राज्य	प्रमुख वन्यजीव
कान्हा राष्ट्रीय उद्यान	मध्य प्रदेश	बाघ, चीतल, तेंदुआ, साँभर, बारहसिंगा
पंचमढी अभयारण्य	मध्य प्रदेश	बाघ, तेंदुआ, चीतल, साँभर, नीलगाय, हिरण, भालू
बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान	मध्य प्रदेश	बाघ, तेंदुआ, साँभर, भालू, नीलगाय, सुअर, तीतर
डाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान	जम्मू-कश्मीर	तेंदुआ, काला भालू, लाल भालू, हिरण, इंगुल
किश्तवाड़ राष्ट्रीय उद्यान	जम्मू - कश्मीर	काला हिरण, जंगली याक, तिब्बती गधा, पहाड़ी तेंदुआ
वेदान्तगल अभयारण्य	तमिलनाडु	जलीय पक्षी
इंदिरा गाँधी अभयारण्य	तमिलनाडु	हाथी, बाघ, चीतल, तेंदुआ, साँभर, रीछ, भालू, जंगली कुत्ता, लंगूर
मुदुमलाई अभयारण्य	तमिलनाडु	हाथी, तेंदुआ, साँभर, हिरण, जंगली कुत्ते
पेरियार अभयारण्य	केरल	हाथी, तेंदुआ, साँभर, हिरण, भालू, नीलगाय, जंगली सुअर
पराम्बिकुलम अभयारण्य	केरल	हाथी, साँभर, नीलगाय, जंगली सुअर, हिरण, तेंदुआ
डाम्फा अभयारण्य	मिजोरम	कोबरा, बिल्ली, फीजेंट
चिल्का अभयारण्य	ओडिशा	क्रेन, जलकौवा, पेलीवन, प्रवासी पक्षी
सिमलीपाल अभयारण्य	ओडिशा	हाथी, बाघ, तेंदुआ, साँभर, हिरण, मगरमच्छ

अध्याय - 10

राष्ट्रपति

- गणतांत्रिक प्रणाली होने के कारण संविधान में 'निर्वाचित राष्ट्रपति' के प्रावधान को शामिल किया गया।

कार्यपालिका प्रमुख

- संविधान के भाग 5 के अनुच्छेद 52 से 78 तक में संघ की कार्यपालिका का वर्णन है।
- अनुच्छेद 52 के अनुसार, भारत का एक राष्ट्रपति होगा।

स्थायी कार्यपालिका एवं अस्थायी कार्यपालिका

अनुच्छेद 53 (1) के अनुसार संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित होगी और वह इसका प्रयोग इस संविधान के अनुसार स्वयं या अपने अधीनस्थ अधिकारियों के द्वारा करेगा।

राष्ट्रपति पद के लिए अर्हताएँ

अनु. 58 के अनुसार राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए एक व्यक्ति को निम्नलिखित अर्हताओं को पूर्ण करना आवश्यक है:

- वह भारत का नागरिक हो।
- वह 35 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हो।
- वह लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होने के योग्य हो।
- वह संघ सरकार अथवा किसी राज्य सरकार अथवा किसी स्थानीय प्राधिकरण अथवा किसी सार्वजनिक प्राधिकरण में लाभ के पद पर न हो।

राष्ट्रपति की पदावधि (Term of Office)

- अनु. 56 के अनुसार, राष्ट्रपति की पदावधि, उसके पद धारण करने की तिथि से पांच वर्ष तक होती है। हालाँकि वह निम्नलिखित रीतियों से अपने कार्यकाल के दौरान ही पदमुक्त हो सकता है:
- भारत के उपराष्ट्रपति को लिखित में त्यागपत्र सौंपकर।
- अनुच्छेद - 60 में राष्ट्रपति की शपथ का प्रावधान है।
- यदि राष्ट्रपति का पद उसकी मृत्यु, त्यागपत्र, निष्कासन अथवा किन्हीं अन्य कारणों से रिक्त हो तो उपराष्ट्रपति, नये राष्ट्रपति के निर्वाचित होने तक कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा। यदि उपराष्ट्रपति, का पद रिक्त हो, तो भारत का मुख्य न्यायाधीश (और यदि यह भी पद रिक्त हो तो उच्चतम न्यायालय का वरिष्ठतम न्यायाधीश) कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा।
- पद रिक्त होने की तिथि से छह महीने के भीतर नए राष्ट्रपति का चुनाव करवाया जाना आवश्यक है। वर्तमान या भूतपूर्व राष्ट्रपति, संविधान के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए इस पद के लिए पुनर्निर्वाचन का पात्र होगा।

निर्वाचन प्रणाली

- भारत के राष्ट्रपति के निर्वाचन (अनु. 55) के लिए आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अनुसार एकल संक्रमणीय मत पद्धति को अपनाया गया है। इस पद्धति

के तहत निर्वाचन, गुप्त मतदान के माध्यम से एक निर्वाचक मंडल द्वारा किया जाता है।

- भारत के राष्ट्रपति के निर्वाचन के लिए सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप से अप्रत्यक्ष चुनाव प्रक्रिया को अपनाया गया है। (अमेरिकी राष्ट्रपति की निर्वाचन प्रक्रिया सैद्धांतिक रूप से अप्रत्यक्ष जबकि व्यावहारिक रूप से प्रत्यक्ष है।)

निर्वाचक मंडल (Electoral college)

निर्वाचक मंडल में सम्मिलित होते हैं:

- संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य।
- राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य
- दिल्ली और पुदुचेरी संघ शासित प्रदेशों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य (70 वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा शामिल।)

इसका अर्थ है कि निम्नलिखित सदस्यों को राष्ट्रपति चुनाव में मतदान करने की अनुमति नहीं है:

- लोकसभा के मनोनीत सदस्यों को।
- राज्यसभा के मनोनीत सदस्यों को।
- राज्य विधानसभा के मनोनीत सदस्यों को।
- राज्यों की विधानपरिषदों के निर्वाचित एवं मनोनीत सदस्यों को।
- राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव से संबंधित मामलों को विधि द्वारा विनियमित करने का अधिकार संसद को प्राप्त है। राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति निर्वाचन अधिनियम के तहत राष्ट्रपति के पद के लिए नामांकन हेतु एक उम्मीदवार के पास कम से कम 50 प्रस्तावक (electors as proposers) एवं 50 अनुमोदक (electors as seconders) (निर्वाचक (electors) से यहाँ तात्पर्य राष्ट्रपति के निर्वाचक मंडल (electoral college) के सदस्यों से हैं) होने चाहिए।

निर्वाचन से संबंधित विवाद

- अनुच्छेद 71 के अनुसार, राष्ट्रपति चुनाव से संबंधित सभी विवादों की जांच निर्णय भारत के उच्चतम न्यायालय (अन्य न्यायालयों का इस पर कोई अधिकार क्षेत्र नहीं है) द्वारा किए जायेंगे, जिसका अधिकार क्षेत्र विशिष्ट और अंतिम होगा। राष्ट्रपति पद के चुनाव से संबंधित किसी चुनाव याचिका को चुनाव परिणाम की घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 30 दिनों के भीतर सुप्रीम कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है। इसे चुनाव में भाग लेने वाले किसी भी उम्मीदवार द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है या याचिकाकर्ता के रूप में किन्हीं बीस या उससे अधिक मतदाताओं को एक साथ शामिल कर भी याचिका प्रस्तुत की जा सकती है। याचिका केवल दो आधारों पर दी जा सकती है:
- उम्मीदवार का नामांकन गलत तरीके से खारिज किया गया, है या
- निर्वाचित उम्मीदवार को गलत तरीके से विजयी घोषित किया गया है।



अध्याय - 5

राष्ट्रीय आय

सकल घरेलू उत्पाद (GDP)

- एक लेखा वर्ष में एक देश की घरेलू सीमा में सभी उद्यमियों, चाहे वे निवासी हों या अनिवासी द्वारा की गई सकल मूल्य वृद्धि को सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product) कहा जाता है।
- इसी प्रकार देश के सामान्य नागरिकों द्वारा विदेशों में की गई मूल्य वृद्धि संबंधित देश के सकल घरेलू उत्पाद का भाग है।

शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP)

- शुद्ध घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product) ज्ञात करने के लिए GDP में से पूँजी स्टॉक की खपत (मूल्य हास) को घटाना होता है।
- गणितीय समीकरण के रूप में, $NDP = GDP = Depreciation$
- बाजार कीमत तथा कारक (साधन) लागत की अवधारणा
 - राष्ट्रीय आय / राष्ट्रीय उत्पाद को बाजार कीमत अथवा कारक (साधन) लागत के रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है।
 - बाजार कीमत में व्यक्त राष्ट्रीय आय / उत्पाद (अथवा घरेलू आय / उत्पाद) को बाजार कीमत पर राष्ट्रीय आय (अथवा बाजार कीमत पर घरेलू आय) कहा जाता है।
 - इसी प्रकार, कारक (साधन) लागत के रूप में व्यक्त राष्ट्रीय आय को कारक लागत पर राष्ट्रीय आय कहा जाता है।
 - इन दोनों में निम्नलिखित अंतर पाया जाता है बाजार कीमत में दो प्रभाव सम्मिलित होते हैं -

- आर्थिक सहायता (Subsidies) का प्रभाव जिसके कारण बाजार कीमत घटती है।
 - अप्रत्यक्ष करों (Indirect Taxes) का प्रभाव जिसके कारण बाजार कीमत बढ़ती है।
- कारक लागत, आर्थिक सहायता अथवा अप्रत्यक्ष करों के प्रभाव से मुक्त होती है। तदुसार बाजार कीमत पर राष्ट्रीय आय (अथवा घरेलू आय) को कारक लागत पर राष्ट्रीय आय / राष्ट्रीय उत्पाद में बदलने के लिए निम्नलिखित समीकरण की सहायता ली जाती है
- बाजार कीमत पर राष्ट्रीय आय - अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक = कारक लागत पर राष्ट्रीय आय
 - आर्थिक सहायता जो बाजार कीमत को कम करती है इसमें जोड़ी जाती है एवं अप्रत्यक्ष कर जो बाजार कीमत को बढ़ाते हैं इसमें से घटाए जाते हैं।
 - उपर्युक्त समीकरण को निम्नलिखित ढंग से भी लिखा जाता है-

(बाजार कीमत पर राष्ट्रीय आय - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर = कारक लागत पर राष्ट्रीय आय)

(शुद्ध अप्रत्यक्ष कर = अप्रत्यक्ष कर - आर्थिक सहायता)

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)

- सकल राष्ट्रीय उत्पाद से आशय एक वर्ष की अवधि में एक देश के सामान्य नागरिकों द्वारा देश की घरेलू सीमा के अंदर या बाहर उत्पादित की गयी अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं के सकल मूल्य से है।
- इसका अनुमान घरेलू उत्पाद में शुद्ध विदेशी साधन आय जोड़कर लगाया जा सकता है।

$$(GNP = GDP + X - M)$$

जिसमें

X = देशवासियों द्वारा विदेशों में अर्जित आय

M = विदेशियों द्वारा देश में अर्जित आय

उपर्युक्त समीकरण से स्पष्ट है कि यदि $X = M$ है, तो $GNP = GDP$ के होगा। इसी प्रकार जब बन्द अर्थव्यवस्था (Closed economy) के अन्तर्गत $X - M = 0$ (शून्य) है तो वहाँ $GNP = GDP$ होगा।

शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)

- शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादक ज्ञात करने के लिए GNP में से पूँजी सटॉक की खपत (मूल्य हास) को घटाना होता है।

गणितीय समीकरण के रूप में-

$$(NNP = GNP - Depreciation)$$

राष्ट्रीय आय (National Income)

- जब NNP का मूल्यांकन अथवा मापन साधन लागत पर किया जाता है, तो उसे ही राष्ट्रीय आय के नाम से जाना जाता है।
- इसे ज्ञात करने के लिए बाजार मूल्य पर आकलित शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP) में से अप्रत्यक्ष करों को घटाना होता है, जबकि सब्सिडी को जोड़ना होता है। इस प्रकार से ज्ञात मूल्य ही साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product at Factor Cost) अथवा राष्ट्रीय आय कहलाता है।

गणितीय समीकरण के रूप में-

- [साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद अथवा राष्ट्रीय आय (NI) = बाजार कीमतों पर NNP - अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी (Subsidy)]
- राष्ट्रीय आय से अभिप्राय एक राष्ट्र की एक वर्ष में आर्थिक क्रियाओं के फलस्वरूप उत्पादित अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य के माँग से होता है। इसमें उन समस्त अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों को सम्मिलित किया जाता है, जो देश के सामान्य निवासियों द्वारा घरेलू सीमा में अथवा इसके बाहर रहकर उत्पादित की गई हैं। इसमें विदेशों से अर्जित साधन आय को भी सम्मिलित किया जाता है। इसे राष्ट्रीय उत्पाद भी कहा जाता है।

भारत में नीली क्रांति

- नीली क्रांति का संबंध मत्स्यपालन से है यानी मछली के उत्पाद को बढ़ावा देना और किसानों की इनकम दोगुनी करना है।
- नीली क्रांति की शुरुआत दुनिया में 1960 में हुई थी, उस समय मछली पालन पीक पर था।
- भारत में मत्स्यपालन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने एक इंडिपेंडेंट मिनिस्ट्री बनाई है, विश्व में मत्स्यपालन में दूसरा स्थान है।
- भारत में इसके अच्छे परिणाम नज़र आए निर्यात में काफी इजाफा हुआ है नीली क्रांति से भारत मत्स्यपालन में आत्मनिर्भर बन गया है और आज हम कई टन निर्यात करने में सक्षम हैं।

क्रान्ति की परिभाषा :-

- नीली क्रांति के बारे में बात करने से पहले जाने कि क्रांति क्या होती है। क्रांति को अंग्रेजी में Revolution कहा जाता है। पहले से चली आ रही किसी भी चीज़ में एक पॉजिटिव परिवर्तन को क्रांति कहते हैं।
- दूसरे शब्दों में, एक पैकेज प्रोग्राम द्वारा मछली और समुद्री उत्पादों में तेज वृद्धि को नीली क्रांति कहा जाता है।
- भारत नीली क्रांति में विश्व में दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। भारत में मछली पालन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कई योजनाएँ बनाई हैं।
- भारत में नीली क्रांति की शुरुआत 7वीं पंचवर्षीय योजना में हुई, जिसकी शुरुआत 1985-1989 तक थी।
- सेंट्रल मरीन फिशरीज प्रोग्राम की शुरुआत 8वीं पंचवर्षीय योजना वर्ष (1992 से वर्ष 1997) के तहत की गयी। कुछ समय बाद तूतीकोरिन, कोच्चि, पोरबंदर, और पोर्ट ब्लेयर फिशिंग पोर्ट बनाए गए।
- उत्पादन बढ़ाने के लिए मछली पालन में सुधार के लिए रिसर्च सेंटर भी खोले गए। मछली पालन में भारत का जीडीपी में लगभग 1% और कृषि GDP में 5% का योगदान है।

नीली क्रांति के जनक

- भारत में नीली क्रांति का जनक हीरालाल चौधरी और डॉक्टर अरुण कृष्णन को माना जाता है।
- भारत में नीली क्रांति की शुरुआत 7वीं पंचवर्षीय योजना जिसकी शुरुआत 1985-1989 तक हुई थी।
- सेंट्रल मरीन फिशरीज प्रोग्राम की शुरुआत 8वीं पंचवर्षीय योजना के तहत की गयी।

मत्स्यपालन के लिए योजनाएँ-

- कृषि के लिए कई योजनाएँ हैं, लेकिन अभी तक जल क्षेत्र में काम कर रहे फार्मर्स के लिए कोई योजना नहीं बनी थी जिससे कि उन्हें उत्पादन बढ़ाने में प्रोत्साहन मिलता, 2019 के बजट में मछली पालन के लिए एक योजना शुरू की गई।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना -

- आत्मनिर्भर भारत की ओर एक कदम बढ़ाने के लिए **20, यूरो 50 करोड़** रुपए का निवेश किया जाएगा यह आज तक मछली पालन के क्षेत्र में सबसे बड़ा निवेश है।
- 12,340 करोड़ का निवेश समुद्री अंतर्देशीय मछली पालन और जली कृषि के लिए आवंटित किया गया है, वहीं 7,710 इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए दिया गया है।
- मछुआरों को लोन की सुविधा आसानी से दी जाएगी, जिससे मत्स्य पालन और जलीय क्षेत्रों को बढ़ावा मिलेगा। जल क्षेत्र में काम कर रहे मछुआरों को भी बीमा कवरेज के अंदर सरकार शामिल करना चाहती है। इस योजना को प्रधानमंत्री ने 'नीली क्रांति' का नाम दिया है।

लक्ष्य

- 2024-2025 तक मछली पालन में 70 लाख टन की वृद्धि करना।
- 2024-25 मछली निर्यात से होने वाली इनकम को 1,00,000 करोड़ रुपए करना।
- इसमें होने वाले नुकसान को 20 से 25% घटाकर 10% करना।
- मछली पालन के क्षेत्र में 55 लाख प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा करने का लक्ष्य है।
- नीली क्रांति का उद्देश्य है कि भारत में मत्स्य पालन को बढ़ावा देना और साथ ही जलीय क्षेत्र के किसानों की आय को दोगुनी करना।

MGNREGA

- इसके तहत कृषि तालाबों का विकास किया जाएगा जहां मछली पालन कार्य हो रहा है।
- भारत में मछली पालन को बढ़ाने के लिए। प्रधानमंत्री मत्स से संपदा योजना शुरू की गई।

नीली क्रांति 2.0

- नीली क्रांति 2.0 इसका उद्देश्य मछलीपालन के विकास और प्रबंधन पर है। इसमें समुद्री मत्स्यपालन में गहरे समुद्र में मछलियां पकड़ना, अंतर्देशीय मछली पालन और नेशनल फिशरीज डेवलपमेंट बोर्ड कार्य कर रहा है।
- नेशनल फिशरीज डेवलपमेंट बोर्ड कृषि और कृषक कल्याण मंत्रालय के अंदर इंडिपेंडेंट संगठन के रूप में कार्य करता है इसकी स्थापना 2006 में की गई थी। इसका उद्देश्य मछली उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाना है। वर्तमान में पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के अंदर काम करता है।
- इसका लक्ष्य मछुआरों और मत्स्यपालन करने वाले को आर्थिक रूप से सक्षम बनाना है। इसमें सुरक्षा और पर्यावरण संबंधी चिंताओं का भी ध्यान रखा जाएगा।

इसका उद्देश्य क्या है-

- देश में खाद्य और पोषण सुरक्षा बढ़ाना।
- मछुआरों और मछली उत्पादकों की आय को दोगुनी करना जिसमें उत्पादकता बढ़ाने के बाद मार्केटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर ई-कॉमर्स और अन्य टेक्नोलॉजीज का उपयोग करना।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

(Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - <https://shorturl.at/qBJ18> (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - <https://shorturl.at/tGHRT> (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - <http://surl.li/rbfyn> (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - <https://youtu.be/gPqDNlc6UR0>

Rajasthan CET 12th Level - <https://youtu.be/oCa-CoTFu4A>

RPSC EO / RO - <https://youtu.be/b9PKjl4nSxE>

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s>

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - <https://youtu.be/2gz2fJyt6vI>

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - <https://wa.link/29dvxg> 1 web.- <https://rb.gy/8kw806>

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1 st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.